Pahadi House as mentioned in NavBharat Times (24 April 2018)

eUttaranchal.com and **Meraki Triangle** are proud exclusive partner of Pahadi House.

More Details and Booking Information: https://bit.ly/2HqDpLx

खंडहरों को पहाड़ी हाउस बनाया, टूरिस्ट आने से कमाई बढ़ी, लोग लौटने लगे

Mahesh.pandey
@timesgroup.com

■ **देहरादून :** उत्तराखंड के पहाड़ी गांवों से पलायन होने के बाद हजार से ज्यादा गांव वीरान हो चुके हैं। यहां के घर खंडहरों में तब्दील हो चुके है। राज्य सरकार लोगों को वापस बुलाने के लिए स्कीम लॉन्च करती रहती है। लेकिन इसी बीच कुछ युवाओं ने खंडहरों को रोजगार का जरिया बना लिया। पौड़ी जिले के अभय शर्मा और टिहरी के यश भंडारी ने ऐसा किया। उन्होंने गावों के खंडहर घरों को 'पहाड़ी हाउस' का नाम देकर प्रचार करना शुरू किया है। ये दोनों युवा पहले पौड़ी में राफ्टिंग-कैंपिंग के व्यवसाय से जुड़े थे। लेकिन 2013 की आपदा ने इनके रिजॉर्ट और बिजनेस को बर्बाद कर दिया। इसके बाद दोनों ने कुछ नया करने की ठानी। अब खंडहरों को 'पहाड़ी हाउस' बनाने में लगे हैं। फिलहाल अभय और यश के टिहरी गढ़वाल के काणाताल और चौपड़ियाल गांव (मसूरी-चंबा रोड) में दो 'पहाड़ी हाउस' हैं। इन घरों को किराए पर लेकर सजाया और संवारा गया है। घरों की पहाड़ी शैली से छेड़छाड़ नहीं की गई। अब यहां आने वाले पर्यटकों की तादाद लगातार बढ़ रही है। इनमें विदेशी सैलानी भी शामिल हैं। यहां लोग खुद अपना खाना भी बना सकते हैं। स्थानीय लोगों के खेतों से सब्जियां खरीदी जाती हैं। इस तरह लोगों को मकान से किराया मिलता है और खेती से आमदनी। यह देखकर इन गावों के पलायन कर चुके लोग वापस आ रहे हैं। उत्तराखंड के सीएम भी इन दोनों युवाओं की तारीफ कर चुके हैं।

ऐसा कहा जा रहा है कि अभय और यश के काम से उत्तराखंड सरकार को भी आइडिया मिला। पलायन रोकने को सरकार ने फरवरी 2016 में 'होम स्टे' योजना शुरू की। यानी उत्तराखंड के पहाड़ी गांवों में कई खूबसूरत पर्यटक स्थल हैं। लेकिन वहां रुकने, खाने-पीने की व्यवस्था न होने के कारण लोग नहीं आते। होम स्टे योजना के तहत ऐसे गांवों में दो से छह कमरों का एक घर बनाया जाएगा। यहां सैलानियों के लिए रुकने, खाने-पीने की व्यवस्था होगी। इसके अलावा सरकार ने जा चुके लोगों दोबारा बुलाने (रिवर्स पलायन) को प्रोत्साहित करने को पलायन आयोग की वेबसाइट लॉन्च की है। राज्य सरकार पर्यटन को आमदनी और रोजगार का मुख्य जरिया बनाते हुए लोगों को वापस बुलाने की कोशिश में है। इसकी शुरुआत टिहरी में बनी करीब 45 किमी लंबी श्रीदेव सुमन सागर झील से की जा रही है। सरकार बताने में जुटी हुई है कि यह झील पर्यटकों का बड़ा आकर्षण है। यानी धार्मिक पर्यटन के अलावा खूबसूरती के पहलू के मामले में सरकार पहचान स्थापित करना चाहती है।

सरकार ने भी शुरू की है 'होम स्टे' योजना

40 फीसदी लोग उत्तराखंड के पहाड़ी गांवों से पलायन कर चुके हैं

15 हजार करोड़ खर्च हो चुके हैं, लेकिन लोगों को जाना नहीं रुका

1048 गांव ऐसे हैं, जहां कोई नहीं रहता है, घर खंडहर हो चुके हैं

2022 तक सभी गांवों को सड़क से जोड़ने की योजना, ताकि लौटें लोग

इधर ग्रामीणों को कोर्स करा रहे, ताकि कमा सकें

■ दून स्कूल से पढ़े 48 साल के मनीष जोशी पौड़ी जिले के गांव डुंगरी में कैंप लगाकर स्थानीय लोगों को ट्रेनिंग देते हैं। वे लोगों को रॉक क्लाइंबिंग, ट्रेकिंग, विलेज इंटरैक्शन जैसे कोर्स कराते हैं। ताकि पर्यटकों को अस्सिट किया जा सके। कंडारा गांव में वह पैराग्लाइडिंग भी शुरू करा चुके हैं। ऐसे कामों से स्थानीय लोगों को रोजगार मिला है और पलायन कर चुके युवा भी लौट रहे हैं। इसी तरह मसूरी के पास पंतवाडी गांव में भी जा चुके लोग लौट रहे हैं। इस गांव में पिछले कुछ समय से लगातार टूरिस्ट ट्रेकिंग के लिए आ रहे हैं। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि गांव में लोगों ने अपने घरों की मरम्मत करवाई और टूरिस्टों के रुकने की व्यवस्था की।